डा. बेबी तबस्सुम रजा पीजी कालेज द्वारा व्याख्यान

पृथ्वी को जीवनमय बनाये रखने का संकल्प

दिनेश चन्द्र शर्मा

राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद् विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा भारत सरकार की एक गतिविधि के रूप में उ.प्र. के 20 जिलों में जैवविविधता जागरूकता अभियान- 2013 आयोजित किया गया। जिसका समापन विगत 31 अगस्त से 01 सितम्बर, 2013 को जवाहर लाल नेहरू राष्ट्रीय युवा केन्द्र 'यूथ हॉस्टल' लखनऊ में राज्य स्तरीय आयोजन के साथ सम्पन्न हुआ। आयोजक संस्था थी वालेण्टरी इन्स्टीट्यूट फॉर कम्युनिटी एप्लाइड साइंस-विकास, इलाहाबाद। कक्षा 8 से 12 तक के छात्र-छात्राओं के बीच आयोजित इस अनूठे कार्यक्रम का उद्देश्य अपने लक्ष्य समूह में जैवविविधता के विषय में समझ बढ़ाने के साथ ही उसके संरक्षण हेतु मनोवृत्ति विकसित करना, जैव विविधता के ताने-बाने व परस्पर सम्बन्धों को समझकर सभी प्रजातियों के प्रति सम आदर भाव जागृत करना तथा उनमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करना था।

आयोजित हुई विभिन्न गतिविधियाँ

जैवविविधता जागरूकता अभियान तीन चरणों में अप्रैल 2013 से प्रारम्भ होकर 01 सितम्बर, 2013 को सम्पन्न हुआ। अभियान के प्रथम चरण में अभियान मार्गदर्शिका एवं ब्रोसर्स विकसित किये गये तथा 20 जिलों के समन्वयकों के साथ एक दिवसीय कार्यशाला 23 जून 2013 को इलाहाबाद के यमुना तट पर स्थित त्रिवेणी पर्यटक गृह पर सम्पन्न हुई जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में सम्पूर्ण अभियान की प्रेरक एवं विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग भारत सरकार की सलाहकार डॉ. शशि आहूजा थीं। उन्होंने अपने सम्बोधन में कहा कि जैवविविधता हमारे जीवन का आधार है इसके प्रति व्यापक जागरूकता आवश्यक है। उन्होंने सम्बन्धित सभी 20 जिला समन्वयकों से आवाहन किया कि वे बड़ी संख्या में बच्चों की सहभागिता विभिन्न गतिविधियों में कराकर जैव विविधता के महत्व के प्रति उन्हें जागरूक करने का कार्य करें। इस अवसर पर इविंग क्रिश्चियन कॉलेज से डॉ. सोनाली

उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि डा. एच. दास द्वारा सम्बोधन

डा. मनोज कुमार तिवारी, वैज्ञानिक सनई अनुसन्धान केन्द्र, प्रतापगढ़ द्वारा व्याख्यान

चतुर्वेदी, सी.एम.पी. डिग्री कॉलेज से डॉ. अर्चना पाण्डेय सहित प्रधान समन्वयक मेजर जे. एन. त्रिपाठी ने भी इस अभियान को सार्थक स्वरूप देने के लिए अपने विचार व्यक्त किया। इस अवसर पर संस्था 'विकास' द्वारा विकसित प्रोग्राम मैनुअल, ब्रोसर्स आदि संसाधन सामग्री भी वितरित की गई। इस अभियान के अन्तर्गत लक्ष्य समूह (कक्षा 8 से 12 तक के छात्र-छात्राओं) के बीच पाँच प्रकार की गतिविधियाँ आयोजित की गयीं जिससे कि वे जैवविविधता के विविध पहलुओं को ठीक से समझाकर उसके साथ अपनापन स्थापित करने की कला सीख सकें। ये गतिविधियाँ अग्रलिखित हैं:

जैवविविधिता पर आधारित प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम

इसमें बच्चों ने जैवविविधता के विभिन्न विषयों व उपविषयों पर अध्ययन किया और सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर दिये, 2. विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित जैवविविधता से सम्बन्धित समाचारों, लेखों, रिपोर्टों, कविताओं, कहानियों व कार्टूनों आदि का संकलन करके उनका अध्ययन किया, 3. सन्दर्भ सामग्री जुटाकर उसका अध्ययन किया तथा जैवविविधता के महत्व को समझकर उसके ह्रास से होने वाले कुप्रभावों पर निबन्ध लेखन किया, 4. 'जैवविविधता का महत्व और चुनौतियां' विषय पर अपनी अवधारणाओं व समझ पर आधारित पोस्टर्स बनाये, 5. सन्दर्भ व्यक्तियों/विशेषज्ञों द्वारा जैवविविधता से सम्बंधित व्याख्यानों का आयोजन हुआ।

जिला स्तरीय आयोजन

सभी 20 जिलों में क्रमशः फिरोज़ाबाद, बरेली, मुरादाबाद, लखनऊ, लखीमपुर खीरी, सीतापुर, जौनपुर, वाराणसी, इलाहाबाद, प्रतापगढ़, फतेहपुर, कानपुर नगर, मिर्ज़ापुर, जालौन, बान्दा, फैज़ाबाद, गोण्डा, कौशाम्बी, बाराबंकी,

जैवविविधता जागरूकता कार्यक्रम की रूप रेखा प्रस्तुत करते हुए
डा. सत्येन्द्र कुमार सिंह

एवं रामपुर में जिला स्तरीय आयोजन से लगभग दो माह पूर्व सभी विद्यालयों को कार्यक्रम से सम्बन्धित मार्गदर्शिका/प्रोग्राम मैनुअल उपलब्ध करवाकर छात्रों की सहभागिता हेतु अनुरोध किया गया। छात्रों ने अपनी रुचि के अनुसार गतिविधियों का चयन किया और विषय से सम्बन्धित सन्दर्भ सामग्री एकत्र की साथ ही वे अपने आस-पास उपलब्ध सन्दर्भ व्यक्तियों/विशेषज्ञों से भी मिले और विषय से सम्बंधित ज्ञान को समृद्ध किया। उन्होंने अपने परिवेश में उपलब्ध जैवविविधता का अवलोकन व आंकलन भी किया और उसके संजालों को समझकर उसके महत्व को जानने-समझने का प्रयास किया। इस तरह उन्होंने जिला स्तरीय आयोजन के लिये अपने आप को तैयार किया। जिला स्तरीय आयोजन में भी अन्य प्रतिभागियों के प्रयासों के अवलोकन व परस्पर विचार-विमर्श तथा विशेषज्ञों के व्याख्यान जैसी प्रक्रिया से उनका ज्ञान परिपक्व हुआ और विषय से सम्बन्धित अद्यतन जानकारियां प्राप्त हुई।

जिला एवं राज्य स्तरीय आयोजन में सहभागिता

	जिला स्तर	राज्य स्तर
सहभागी जिले	20	20
सहभागी छात्र-छात्रायें	8323	120
सहभागी विद्यालय	481	95
सहभागी शिक्षक	681	46
सहभागी वालेण्टियर्स	281	10
सहभागी निर्णायक	240	13
व्याख्याता (वैज्ञानिक)	30	05
अतिथिगण	61	07
कुल सहभागी	1293	289

राज्य स्तरीय आयोजन

31 अगस्त को प्रातः 10.00 बजे उद्घाटन सत्र आरम्भ हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (उ.प्र.) के प्रमुख सचिव डॉ. हरशरण दास पधारे तथा अध्यक्षता कार्यक्रम के प्रधान समन्वयक व अवकाश प्राप्त जीव विज्ञानी मेजर जे. एन. त्रिपाठी ने की। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में बीरबल साहनी पुरावनस्पति विज्ञान संस्थान के वरिष्ठ

प्रतिभागियों की प्रतिक्रियाएं

मानव को अन्य प्रजातियों को नष्ट करने का अधिकार नहीं

प्रतिभागी छात्र-छात्राओं ने इस सम्पूर्ण अभियान को उपलब्धिपूर्ण व प्रेरक बतलाया। श्री राजेन्द्र गिरी मेमोरियल अकादमी, गोला गोकर्णनाथ (खीरी) के. जयंत गुप्त ने कहा कि इस कार्यक्रम में सहभागिता करके हमने जाना है कि मानव अपने स्वार्थ के लिये अन्य प्रजातियों को लुप्तता के गर्त में धकेल रहा है। किसी भी एक प्रजाति को यह अधिकार नहीं है कि वह अन्य प्रजातियों को नष्ट कर दे। पारकर इण्टर कॉलेज, मुरादाबाद के हरवीर दिवाकर का कहना था कि इस क्रम में मैंने कई सन्दर्भ पुस्तकों का अध्ययन किया है और जाना कि जीवों में कैसे-कैसी विविधताएं हैं और वे कैसे एक-दूसरे पर निर्भर रहते हैं। जवाहर नवोदय विद्यालय, प्रतापगढ़ की शशि मिश्रा ने बताया कि इस आयोजन में सहभागिता से हमने जाना कि हमारे क्षेत्र व देश के साथ-साथ विश्व में भी प्रजातियां किस-किस स्थिति से गुजर रही हैं। भविष्य में हम स्वयं तो जैवविविधता के संरक्षण के लिये काम करेंगे ही साथ ही साथ अपने छोटे भाई-बहनों को भी इस दिशा में प्रेरित करेंगे। गुरुनानक इण्टर कॉलेज, मिर्ज़ापुर के शुभम सिंह चंदेल का कहना था कि मैं गणित-भौतिक विज्ञान का छात्र हूँ, अतः जीव-जन्तुओं के विषय में मुझे ज्यादा जानकारी नहीं थी किन्तु इस आयोजन में सहभागिता से मुझे बहुत कुछ सीखने का मौका मिला है। मैंने प्रस्तुतिकरण के तरीके व अपनी बात को ठीक से अभिव्यक्त करने के तरीके भी सीखे हैं।

आर्मी पब्लिक स्कूल, फैज़ाबाद के निखिल श्रीवास्तव ने बताया कि इस कार्यक्रम के रूप में हमें एक बेहतरीन प्लेटफॉर्म मिला है जहाँ हमने मात्र पुस्तकों से ही नहीं अपितु प्रकृति से भी बहुत कुछ सीखा है। हममें परीक्षण करने की क्षमतायें बढ़ी हैं और दूसरे बच्चों से विचार-विमर्श करके भी बहुत कुछ सीखने का अवसर प्राप्त हुआ। केन्द्रीय विद्यालय रामपुर की छात्रा प्रतीक्षा मिश्रा कहना था कि इस कार्यक्रम में सहभागिता से पूर्व मुझे जैवविविधता के विषय में पता तो था किन्तु मैं इतनी गहराई से इसे नहीं समझती थी लेकिन अब मैं न सिर्फ इसे अच्छे से समझी हूँ अपितु इसे संरक्षित करने की दिशा में भी सोचने को अभिप्रेरित हुई हूँ। सरस्वती विद्या मंदिर इण्टर कॉलेज, रामपुर के ताजिम खाँ का कहना था कि मेरे मनोमस्तिष्क में यह विचार बार-बार उठ रहा है कि मानव सभी प्रजातियों का एक छोटा-सा अंश मात्र है उसे अन्य प्रजातियों को नष्ट करने का अधिकार किसने दिया। सेण्ट्रल हिन्दू ब्वायज़ स्कूल (बी.एच.यू.) वाराणसी के प्रवीण कुमार मिश्रा का कहना था कि मैं भविष्य में जेनेटिकली मॉडीफाइड प्लांट विकसित करने पर अपने अध्ययन को आगे बढ़ाऊँगा ताकि बढ़ती जनसंख्या की जरूरतों को पूरा किया जा सके।

वैज्ञानिक डॉ. चन्द्रमोहन नौटियाल, वरिष्ठ वन्य जीव विशेषज्ञ डॉ. वी. पी. सिंह 'विकास' के उपाध्यक्ष श्री आर. एस. रघुवंशी एवं उ. प्र. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद् लखनऊ से वरिष्ठ वैज्ञानिकगण - डॉ. राशि राणा, डॉ. राजेश चतुर्वेदी, श्री एस. एम. प्रसाद, डॉ. आर. डी. गौड़ सहित संयुक्त निदेशक डॉ. डी. के. श्रीवास्तव एवं श्री आई. डी राम भी पधारे।

अपने उद्घाटन भाषण में डॉ. हरशरण दास ने कहा कि प्रत्येक जीव-जन्तु व पेड़-पौधों का जैवविविधता व पारिस्थितिकी तंत्र में एक महत्वपूर्ण स्थान है। ये सभी मिलकर हमारी पृथ्वी को रंग-बिरंगा, सुविधाजनक, सुखदायक व समूचे ब्रह्माण्ड में अनूठा बनाते हैं। इन्हीं के कारण तो हम पृथ्वी पर अपनी आवश्यकता की सभी वस्तुयें प्राप्त करते हैं लेकिन खेद की बात है कि आज मानवीय भूलों का खामियाजा समूची जैवविविधता भुगत रही है और एक-एक करके कई प्रजातियां विलुप्तता की ओर बढ़ रही हैं जो कि एक खतरनाक स्थिति है। डॉ. दास ने जैवविविधता के संरक्षण पर बल देते हुए कहा कि हमें यह भी सोचना चाहिये कि हम भावी पीढ़ी को क्या सौंपने जा रहे हैं रंग-बिरंगी सुविधायुक्त पृथ्वी या फिर एक उजड़ी हुई संसाधन विहीन धरती। प्रमुख सचिव ने आगे कहा कि जैवविविधता के संरक्षण के लिये ग्राम पंचायतों व नगर निकायों को भी सक्रिय भूमिका निभानी चाहिये। उन्होंने विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी को इस स्तर तक ले जाने पर बल दिया जिससे कि जैवविविधता संरक्षित हो। डॉ. दास ने खेद व्यक्त करते हुये कहा कि आज शिक्षक मात्र नौकरी प्राप्त करने की लिये ही पढ़ रहे हैं और नौकरी प्राप्त करने के बाद वे पढ़ाई बंद कर देते हैं ऐसी स्थिति में वे छात्रों को समुचित शिक्षा देने में सक्षम सिद्ध नहीं हो रहे हैं जबकि सीखने और सिखाने का क्रम अनवरत चलता रहना चाहिये। इस अवसर पर उद्गार व्यक्त करते हुए डॉ. चन्द्र मोहन नौटियाल ने कहा कि जैवविविधता के संरक्षण के लिये बच्चों की सृजनात्मकता व जिज्ञासा को बढ़ावा देना जरूरी है क्योंकि इसी से उनमें नये-नये विचार व प्रश्न स्फुर्त होते हैं और समाज की सभी समस्याओं का समाधान होता है।

आयोजक संस्था 'विकास' के उपाध्यक्ष श्री आर. एस. रघुवंशी ने अपने सम्बोधन में कहा कि हमारी संस्कृति 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की अवधारणा पर आधारित है। इसमें केवल मनुष्य ही सम्मिलित नहीं हैं अपितु यहाँ 84 लाख योनियां बतलायी गयी हैं, छोटे-बड़े जीव-जन्तु, घास-फूस व पेड़-पौधे भी इसमें सम्मिलित हैं। मानव तो इसकी एक छोटी-सी इकाई है। आज के वैज्ञानिक भी 80 लाख जैव प्रजातियां होने की बात स्वीकार रहे हैं जिनमें से मात्र 17 लाख जैव प्रजातियों से ही अभी तक मानव का परिचय हो पाया है। वास्तव

जिला समन्वयकों व शिक्षकों की प्रतिक्रियाएं :

पर्यावरण से अपनत्व स्थापित करने में मिली है सहायता

जिला समन्वयकों व शिक्षकों ने भी एकमत से स्वीकार किया कि यह कार्यक्रम बच्चों को जैवविविधता की ओर प्रेरित करने में सक्षम सिद्ध हुआ है। बनारस के जिला समन्वयक डा. गणेश प्रसाद राय ने कहा कि इस कार्यक्रम से बच्चों में विषय के प्रति जागरूकता आयी है वे समझ गये हैं कि यदि मानव जीवों को नष्ट करने की दिशा में आगे बढ़ेगा तो स्वयं उसका भविष्य क्या होगा? लखीमपुर खीरी के जिला समन्वयक डॉ. अनिल कुमार ने कहा कि बच्चों के लिये प्रकृति भ्रमण व वन्य जीव विहार जैसे कार्यक्रम भी आयोजित होने चाहिये साथ ही आम लोगों को भी इन गतिविधियों में शामिल किया जाना चाहिये ताकि वे जैवविविधता को संरक्षित करने में अपना योगदान दे सकें। प्रतापगढ़ के जिला समन्वयक डॉ. विनोद शुक्ला ने कहा कि इस आयोजन में सहभागिता से बच्चों को यह समझने में सहायता मिली है कि जैवविविधता हमारे लिये कितनी उपयोगी है और हम उसे कैसे हानि पहुँचा रहे हैं। मुरादाबाद के जिला समन्वयक श्री मनोज प्रभाकर का कहना था कि आज पाठ्यक्रम में ऐसी गतिविधियों का अभाव है जब कि विद्यालयों व पाठ्यक्रम में इन्हें बढ़ावा दिया जाना चाहिये। जौनपुर की जिला समन्वयक डॉ चन्द्रकला सिंह का कहना था कि इससे बच्चों को अपने पर्यावरण से अपनत्व स्थापित करने में सहायता मिली है। बाराबंकी के जिला समन्वयक अजय कुमार मिश्रा का कहना था कि हमारे पाठ्यक्रम में जैवविविधता पर अत्यल्प सामग्री है ऐसी स्थिति में यह अभियान अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुआ है। इससे बच्चे थोड़े समय में ही विषय की गहराइयों तक पहुँचे हैं बच्चे परस्पर समूहों में इन विषयों पर चर्चायें करते देखे गये हैं। यह इस आयोजन की एक बड़ी उपलब्धि है। सरस्वती विद्या मंदिर इण्टर कॉलेज, रामपुर में रसायन विज्ञान के प्रवक्ता प्रदीप कुमार का कहना था कि जिले से राज्य स्तर की सम्पूर्ण गतिविधियों में सहभागिता से बच्चों में अतुलनीय बौद्धिक तथा व्यवहारिक ज्ञान का विकास हुआ है। जो बच्चे अन्तर्मुखी थे उनमें अभिव्यक्ति की क्षमतायें भी विकसित हुई हैं। मात्र बच्चों को ही नहीं अपितु शिक्षकों को भी बहुत कुछ सीखने का अवसर प्राप्त हुआ है।

जैवविविधता पर निबन्ध का मूल्यांकन

कुमार सिंह ने सभी के प्रति धन्यवाद एवं अभार प्रकट किया।

गतिविधियों में सहभागिता से आनंदित विद्यार्थी

20 जिलों से चयनित होकर आये 120 छात्र- छात्राओं ने राज्य स्तरीय आयोजन में 1. जैवविविधता क्विज़-जिसमें क्विज़ मास्टर द्वारा विभिन्न चक्रों में विषय आधारित विभिन्न प्रश्न पूछे गये, 2. भाषण प्रतियोगिता - जैवविविधता : महत्व एवं चुनौतियां विषय पर अपने अध्ययन के आधार पर भाषण दिये। उन्होंने अपने भाषणों का आलेख भी निर्णायकों के पास जमा किया, 3. पोस्टर पेटिंग गतिविधि - जैवविविधता : महत्व एवं चुनौतियां विषय पर ही बच्चों ने अपनी अवधारणाओं, विचारों व कल्पनाओं को अपने द्वारा बनाये गये पोस्टर्स व पेटिंग्स में चित्रित किया।

प्रकाशित लेखों/ समाचारों का संकलन गतिविधि

जैवविविधता विषय पर विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों, कविताओं, कार्टूनों, समाचारों व रिपोर्ट्स आदि का संकलन कर प्रदर्शित किया। उक्त चारों गतिविधियों में बढ़-चढ़ कर भागीदारी करके उन्हें अपने ज्ञान को प्रदर्शित करने का अवसर तो प्राप्त हुआ ही साथ ही दूसरे छात्र-छात्राओं की गतिविधियों को देखकर तथा उनसे विचार-विमर्श करके भी उन्होंने अपने ज्ञान को परिपक्व किया तथा अवधारणाओं को स्पष्ट किया। इस तरह परस्पर सीखने-सिखाने की प्रक्रिया से भी वे लाभान्वित हुए। ये गतिविधियां चार समानांतर सत्रों में आयोजित हुई, जिनमें 16 निर्णायकों ने मूल्यांकन क्रिया सम्पन्न की।

जैवविविधता : लेख एवं समाचार संकलन

विशेष व्याख्यान

प्रतिभागियों के ज्ञान को परिपक्व और अद्यतन बनाने के लिये आयोजन में विशेष व्याख्यान भी आयोजित किये गये जिनका संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है :

मुस्कुराइये कि हम पृथ्वी पर हैं!

'मैन ऑफ द डायवर्सिटी' के नाम से विख्यात डॉ. रामलखन सिंह (सदस्य, योजना आयोग एवं पूर्व मुख्य वन संरक्षक, उ.प्र.) ने सरल, सहज व रोचक अन्दाज में प्रस्तुत अपने व्याख्यान में छात्र-छात्राओं को एक महत्वपूर्ण स्लोगन दिया - 'मुस्कुराइये कि हम पृथ्वी पर हैं।' उन्होंने कहा कि पृथ्वी ही एक ऐसा पिंड है जहाँ हम जीवित हैं और सुखमय जीवन बिता

में हमें अपने समूचे पर्यावरण और जैवविविधता के संरक्षण के लिये प्रयासरत होना होगा तभी तो वसुधैव कुटुम्बकम् की अवधारणा मूर्त रूप ग्रहण करेगी और यही हमारे लिये हितकारी भी होगा। मेजर जे. एन. त्रिपाठी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में एक घटना का वर्णन करते हुये बतलाया कि हमारे एक मित्र के अंगूर के बगीचे में कई गिरगिट थे। वे अंगूर के गुच्छों के डंठलों पर मुंह मारकर कुछ खाने का उपक्रम करते थे। मित्र ने अंगूरों के नष्ट होने का कारण गिरगिटों को समझा और उन्हें मारने का निर्णय ले लिया। एक गिरगिट को तो उन्होंने मार भी दिया। अचानक मैं वहाँ पहुँच गया और अवलोकन करने पर मैंने पाया कि गिरगिट तो अंगूरों के डंठलों पर बैठे हुये उन कीट-पतंगों को खा रहे हैं जो अंगूरों को क्षति पहुँचा रहे हैं। जब मैंने अपने मित्र को इस तथ्य से अवगत कराया तो उन्हें अपनी भूल का अहसास हुआ और उन्होंने गिरगिटों का संरक्षण करने का निर्णय लिया। मेजर त्रिपाठी ने बतलाया कि इसी तरह मेंढक, छिपकली व सांप भी हमारे मित्र हैं लेकिन हम उन्हें संरक्षित करने हेतु जागरूक नहीं हैं और अन्त में आयोजक संस्था वालेण्टरी इन्स्टीट्यूट फॉर कम्युनिटी एप्लाइड साइन्स 'विकास' के निदेशक डॉ. सत्येन्द्र

आयोजकों की प्रतिक्रियाएं

स्थानीय जैवविविधता से रूबरू हुए हैं सहभागी

हमारा देश विश्व के 12 बड़े जैवविविधता वाले देशों में से एक है। अतः अब तक की परिचित 17 लाख जैव प्रजातियों में से 1.2 लाख अर्थात् 7. 5 प्रतिशत यहाँ पायी जाती हैं। आधुनिक वैज्ञानिक उन्नतियों ने जैवविविधता के महत्व एवं उपयोग को भी बढ़ा दिया है। इस परिप्रेक्ष्य में इस अभियान के माध्यम से हमने सहभागियों को जैवविविधता के विवेकशील सतत् उपयोग एवं संरक्षण हेतु नियोजन करने के दिशा में नियोजन करने हेतु प्रेरित करने का प्रयास किया है। उन्हें यह समझाने का भी प्रयास किया है कि पृथ्वी पर पायी जाने वाली विविध प्रजातियों के सहसम्बन्धों का ताना-बाना नैसर्गिक रूप से बना है और किसी एक प्रजाति के ऊपर आने वाले खतरों से अन्य प्रजातियां भी प्रभावित हो रही हैं। सहभागी अपनी स्थानीय जैवविविधता से रूबरू हुए हैं और उससे अपनत्व स्थापित करने की ओर भी प्रेरित हुए हैं।

• डॉ. एस. के. सिंह (निदेशक, विकास, इलाहाबाद उ.प्र. एवं राज्य समन्वयक, जैवविविधता जागरूकता अभियान-2013)

इस अभियान के माध्यम से हम सहभागी छात्र-छात्राओं को यह सन्देश देने में सफल रहे हैं कि जैवविविधता के प्रति मानव के क्या दायित्व हैं। उन्होंने पोस्टर पेंटिंग बनाते समय तो इस विषय में अपनी गहरी समझ का परिचय दिया ही है साथ ही अपने भाषणों में भी अपनी अनूठी अवधारणायें प्रदर्शित की हैं। पत्र-पत्रिकाओं से इस विषय पर अध्ययन सामग्री जुटाने में भी उनकी अभिरुचि व पहुँच का पता चलता है। वैज्ञानिकों के व्याख्यानों से उनका ज्ञान परिपक्व हुआ है। हमें विश्वास है कि उक्त सहभागियों के कदम जैवविविधता संरक्षण की ओर दृढ़ता से आगे बढ़ेंगे।

• श्री आर. एस. रघुवंशी (उपाध्यक्ष, विकास, इलाहाबाद)

उक्त अभियान में सहभागिता से इन किशोरों में जैवविविधता के प्रति वैज्ञानिक सोच विकसित हुई है। उन्होंने इस बात को बारीकी से समझा है कि विभिन्न जीव-जन्तु एक-दूसरे पर कैसे निर्भर रहते हैं अतः सभी को संरक्षित किया जाना अति आवश्यक है। इस छोटी-सी आयु में भी उन्होंने समझ लिया है कि जीवों के प्राकृतिक आवासों में मानवीय हस्तक्षेप से जैवविविधता पर क्या दुष्प्रभाव पड़ रहा है। इस तरह इस अभियान के माध्यम से हम अपने उद्देश्यों में सफल रहे हैं।"

• राहुल माथुर, सह जिला समन्वयक, कानपुर नगर

कानपुर नगर के सह जिला समन्वयक राहुल माथुर ने अपनी प्रतिक्रिया में कहा कि जिस तरह हमारा राष्ट्रीय पक्षी मोर है तथा उ0 प्र0 का राज्य पक्षी सारस है, उसी प्रकार सभी जिलों का जिला पक्षी भी घोषित किया जाना चाहिए। इससे लोगों को 75 प्रकार के पक्षियों के विषय में जानने की जिज्ञासा होगी और उनका संरक्षण भी होगा। उन्होंने पनकी को जलापूर्ति करने वाली नहर के आस-पास के निर्जन स्थान को पक्षियों के वास के लिये उपयुक्त स्थान बतलाते हुये वहां 'पक्षी विहार' बनाये जाने का सुझाव भी प्रस्तुत किया। श्री माथुर ने अवारा कुत्तों को प्रशिक्षित करके विभिन्न उपयोगों में लाने का सुझाव भी दिया, इससे अवारा कुत्ते समाज के लिये उपयोगी सिद्ध होंगे और उनका संरक्षण भी होगा।

कुल मिलाकर सभी ने यह तथ्य भी एकमत से स्वीकार किया कि यह अभियान सहभागी छात्र-छात्राओं के लिये तो उपयोगी सिद्ध हुआ ही है साथ ही अप्रत्यक्ष रूप से इसके सम्पर्क में आने वाले छात्र-छात्राओं, अध्यापकों, निर्णायकों, वैज्ञानिकों, अभिभावकों व अन्य लोगों को भी जैवविविधता के संरक्षण की दिशा में प्रेरणा देने वाला सिद्ध हुआ है।

जालौन में विजेता प्रतिभागी

कानपुर में जिला स्तरीय आयोजन में पुरस्कार वितरण

रहे हैं अन्यत्र तो हमारा अस्तित्व सम्भव ही नहीं था। डॉ. सिंह ने बतलाया कि पृथ्वी पर उपलब्ध पेड़-पौधों में ही यह क्षमता है कि वे सूर्य से प्राप्त होने वाली ऊर्जा का कुछ भाग वापिस नहीं जाने देते अपितु वे यहाँ उपलब्ध तत्वों को हमारे उपयोग करने योग्य पदार्थों में बदलते हैं। मानव सीधे सूर्य की रोशनी से अपनी जरूरतें पूरी नहीं कर सकता यह गुण केवल पेड़-पौधों के पास ही है। उन्होंने यह भी बतलाया कि पृथ्वी पर 118 तत्वों की खोज हुई है। इन्हीं से यहाँ सब कुछ विकसित हुआ है और हमारे उपयोग की वस्तुयें हमें प्राप्त हो रही है। पृथ्वी से ही हमें रोटी, कपड़ा, और मकान आदि सभी कुछ उपयोग की वस्तुयें प्राप्त होती हैं।

'मैन ऑफ द डायवर्सिटी' ने बतलाया कि पृथ्वी पर लगभग 80 लाख जैव प्रजातियां होने का अनुमान है उनमें से मात्र 17 लाख को ही मानव पहचान सका है। शेष अभी हमारे लिये अजनबी हैं और उन्हें पहचानने की जरूरत है। उन्होंने आगे कहा कि जैसे पृथ्वी पर आग और पहिये की खोज हुई और मानव तेजी से विकास पथ पर आगे बढ़ा। उसी तरह भूमिगत जल स्रोतों की खोज भी एक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। आज वायुमण्डल में उपलब्ध पानी को अपनी इच्छानुसार प्राप्त करने की विधियां खोजना भी एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। डा. सिंह ने जी. एम. फसलों (जेनेटिकली मॉडीफाइड क्रॉप्स), बायोपायरेसी, एवं बायोडायवर्सिटी कंज़र्वेशन एक्ट-2002 के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी और बायोस्फीयर रिज़र्व, वन्य जीव विहार व नेशनल पार्क्स के महत्व को बताते हुए उनमें परस्पर अंतर को भी स्पष्ट किया। उन्होंने बतलाया कि हमारे देश में वन्य जीवों की सुरक्षा के लिये 101 नेशनल पार्क व 522 वन्य जीव विहार हैं। चाणक्य के 'अर्थशास्त्र' के एक श्लोक को उद्धृत करते हुये उन्होंने कहा कि चाणक्य ने अभ्यारण्य की परिभाषा इस प्रकार दी है- शासन का दायित्व है कि वह कुछ ऐसे क्षेत्रों की स्थापना करें जहाँ मानव जाति के भय से मुक्त होकर वन्य जीव विकसित हो सकें। डॉ. रामलखन सिंह ने बच्चों में खोजी प्रवृत्ति को बढ़ावा देने पर बल दिया ताकि वे नयी-नयी खोजें करके इस पृथ्वी को रंग-बिरंगा व पूरे बह्माण्ड में अनूठा बनाये रखने में अपना योगदान दें। सभी ने डॉ. सिंह के व्याख्यान व उनके प्रस्तुतीकरण के तरीके की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

खान-पान का समय

सम्पन्नता का आधार है जैवविविधता

अपने प्रेरणास्पद व्याख्यान में (वन्य जीव विशेषज्ञ) डॉ. वी. पी. सिंह ने कहा कि अभी तक की जानकारी के अनुसार ब्रह्माण्ड में मात्र हमारी पृथ्वी पर ही जीवन है। आज ज्वलंत प्रश्न यह है कि भविष्य में यहाँ भी जीवन बचेगा अथवा नहीं। उन्होंने बतलाया कि पृथ्वी पर जितने भी जीव हैं वे सभी विभिन्न श्रृंखलाओं द्वारा परस्पर जुड़े हुए हैं, यदि किसी कारणवश एक भी प्रभावित होता है तो दूसरे भी प्रभावित हुए बिना नहीं नहीं रह सकते। डॉ. सिंह ने खनन गतिविधियों के दुष्परिणामों को बताते हुये कहा कि जब हम नदियों से बालू का खनन करते है तो इतना ही समझते हैं कि हम मात्र वहाँ से बालू ग्रहण कर रहे हैं जबकि वास्तव में ऐसा करके हम बहुत सारे सीप, घोंघा जैसे जलजीवों व तटीय क्षेत्रों में रहने वाले जीवों को भी नष्ट करते हैं उनके आवास उनसे छीनते हैं साथ ही बहुत सारी वनस्पतियों को भी समूल नष्ट करते हैं। इससे नदियों के आस-पास की जैवविविधता बुरी तरह प्रभावित हो रही है। डॉ. वी.पी. सिंह ने जाल से मछली पकड़ने की गतिविधि के विषय में टिप्पणी करते हुये कहा कि इससे हम मछलियों के साथ-साथ उन छोटे बच्चों को भी नष्ट कर देते हैं जिन्हें भविष्य में बड़ी मछली बनना है। गिद्धों के गायब होने को उन्होंने 20वीं शताब्दी की सबसे बड़ी त्रासदी बताया और जानकारी दी कि उत्तर प्रदेश के राज्य पक्षी सारस की संख्या भी घटती जा रही है। आज नमभूमि भी घट रही है परिणामतः बहुत सारे जीवों के आवास भी नष्ट हो रहे हैं।

डॉ. वी. पी. सिंह ने बताया कि आई.सी.यू.एन. के अनुसार आज विश्व में 794 प्रजातियां लुप्त होने के कगार पर हैं। उन्होंने बताया कि घास के मैदान भी जैवविविधता के संरक्षण और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शाकाहारी व मांसाहारी दोनों तरह के जीव इन पर निर्भर रहते हैं किन्तु खेद की बात है कि आज घास के मैदान भी सिकुड़ते जा रहे हैं, परिणामतः जैवविविधता भी प्रभावित हो रही है। उन्होंने कहा कि भविष्य में वही देश सम्पन्न होगा जहाँ भरपूर जैवविविधता होगी, क्योंकि जैवविविधता सम्पन्नता का आधार है अतः इसको संरक्षित किया जाना जरूरी है। उन्होंने चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि हम अपने बायोमास के कुल उत्पादन का 5 गुना खर्च कर रहे हैं अर्थात् हम अपनी पूंजी को ही खा रहे हैं। स्पष्ट है कि हम संसाधनों की किल्लत की ओर बढ़ रहे हैं यह एक खतरनाक स्थिति है।

इस आयोजन में विशेष सत्रों में 'विकास' के सन्दर्भ व्यक्तियों श्री प्रमोद कुमार मिश्र द्वारा 'चमत्कारों की वैज्ञानिक व्याख्या, स्वप्निल कुमार शर्मा व अभिषेक द्वारा 'वर्कशॉप ऑन एनसीएससी वेब पोर्टल फॉर यूज़र्स एट वेरियस लेवल्स' तथा शिवेन्द्र तिवारी व रितेश सिंह के द्वारा 'पॉलीथीन को पर्यावरण मित्र तरीकों से समाप्त करके दूसरे उत्पादों को तैयार करना' विषयों पर रोचक व ज्ञानवर्द्धक प्रस्तुतिकरण दिये गये। प्रतिभागियों ने इन सत्रों में भी गहरी रुचि दिखलायी।

समापन सत्र

द्वितीय दिवस - 01 सितम्बर, 2013 को प्रतिभागियों द्वारा फीडबैक चर्चा व समापन समारोह आयोजित हुआ जिसकी अध्यक्षता मेजर जे. एन. त्रिपाठी ने की। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. विजय प्रताप सिंह तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री एस. एम. प्रसाद व श्री आर. एस. रघुवंशी पधारे। समारोह का संचालन जौनपुर की जिला समन्वयक डॉ चन्द्रकला सिंह ने किया आयोजक संस्था 'विकास' के निदेशक एवं राज्य समन्वयक डॉ. सत्येन्द्र कुमार सिंह ने सभी आगंतुकों का स्वागत एवं धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर आयोजन में बेहतर प्रदर्शन के लिये 18 छात्र-छात्राओं सहित सभी 20 जिला समन्वयकों एवं निर्णायकों तथा अतिथियों को स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया। पृथ्वी को जीवनमय बनाये रखने के संकल्प के साथ इस अनूठे अभियान का समापन हुआ।

संपर्क सूत्र :
श्री दिनेश चन्द्र शर्मा, वालेण्टरी इंस्टीट्यूट फॉर कम्युनिटी एप्लाइड साइंस-विकास, एच.डी. 86, ए.डी.ए. कॉलोनी, नैनी, इलाहाबाद - 211008 (उ.प्र.)
[मो. : 09358025216
ई-मेल : dineshvicas@gmail.com, vicasald@gmail.com]